'परमेश्वर श्रीकृष्ण सब ईश्वरों के परम महेश्वर एवं सभी देवताओं के परमोच्च देव हैं। सभी उनके आधीन हैं। जीवात्मा स्वय परतत्त्व नहीं है, परन् उनकी विशिष्ट शक्ति के स्रोत श्रीकृष्ण हैं। श्रीकृष्ण देवताओं के आराध्य तथा समस्त नियन्ताओं के भी नियन्ता हैं। अतएव जगत् के लोकनायकों और ईश्वरों से अतीत होने के कारण वे सर्ववन्दनीय हैं। उनसे अधिक कोई नहीं है, वे ही सब कारणों के परम कारण हैं।'

'भगवान् का श्रीविग्रह साधारण जीवात्मा के देह के समान नहीं है। उनके देह एवं आत्मा में भेद नहीं है, क्योंकि वे अद्वय-तत्त्व हैं। प्रभु की सब इन्द्रियाँ भी चिन्मय हैं। इसीलिए उनकी प्रत्येक इन्द्रिय अन्य सब इन्द्रियों का कार्य कर सकती है। अतः उनके समान अथवा उनसे अधिक कोई नहीं हो सकता। वे विविध शक्तियों से युक्त हैं एवं उनकी लीला स्वाभाविक क्रमानुसार अपने-आप सम्पादित होती है।' (श्वेताश्वतरोपनिषद् ६.७-८)

श्रीभगवान् में सम्पूर्ण ऐश्वर्य यथार्थतः परिपूर्णतम रूप में प्रकाशित रहते हैं। अतः उनके लिए कोई कर्तव्य नहीं है। कर्तव्य का विधान फलेप्सु के लिए ही है। जिसके लिए त्रिभुवन में कुछ भी प्राप्त करने योग्य नहीं है, उसके लिए निस्सन्देह कुछ भी कर्तव्य नहीं हो सकता। फिर भी, क्षत्रियनायक होने के नाते भगवान् श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र युद्ध में तत्पर हैं, क्योंकि आर्त को आश्रय देना क्षत्रिय का प्रधान धर्म है। शास्त्राज्ञा से सर्वथा परे होने पर भी श्रीभगवान् शास्त्र-विरुद्ध आचरण कभी नहीं करते।

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।२३।।

यदि=यदि; **हि**=क्योंकि; **अहम्**=मैं; **न**=नहीं; **वर्तेयम्**=तत्पर रहूँ; **जातु**=कभी; **कर्मणि**=कर्म में; **अतन्द्रितः**=सावधान हुआ; **मम**=मेरे; **वर्त्म**=पथ का; **अनुवर्तन्ते**=अनुगमन करेंगे; **मनुष्याः**=सब मानव; **पार्थ**=हे पार्थ; **सर्वशः**=सब प्रकार से।

अनुवाद

क्योंकि यदि मैं सावधान होकर कर्म न करूँ, तो हे पार्थ! सब मनुष्य मेरे पथ का ही अनुगमन करेंगे।।२३।।

तात्पर्य

पारमार्थिक उन्नति के लिए आवश्यक सामाजिक शान्ति बनाए रखने के हेतु ऐसे अनेक परम्परागत कुलाचार हैं, जिनका सभी सभ्य मनुष्यों को पालन करना चाहिए। ये विधि-विधान वस्तुतः मायाबद्ध जीवों के लिए ही हैं, श्रीकृष्ण के लिए नहीं। परन्तु धर्म की स्थापना के लिए अवतरित होने पर उन्होंने इन सभी नियमों का पालन किया। अन्यथा, साधारण मनुष्य भी उनका अनुकरण करते हुए कर्म का त्याग कर देते, क्योंकि वे परमप्रमाण हैं। श्रीमद्भागवत से ज्ञात होता है कि श्रीकृष्ण अपने घर में और बाहर भी गृहस्थोचित धर्म का पूर्ण रूप से आचरण करते थे।